अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का प्रारंभ

अणुव्रत वर्तमान की जरूरत : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 7 फरवरी।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा - भिक्षु संघ में जो दीक्षित है वह सचमुच सौभाग्यशाली होते हैं जो दीक्षित होकर अपनी साधना करते हुए जनता का मार्ग दर्शन करते हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा - आर्थिक मंदी ने समाज की व्यवस्थाओं को तोड़ कर रख दिया है। नैतिक मूल्यों के अभाव में समस्यायें पैर पसारती जा रही है। जब तक नैतिक मूल्यों का विकास और अहिंसक चेतना का जागरण नहीं होगा तब तक समाज को रसातल में जाने से कोई बचा नहीं सकता, समाज में जब-जब नैतिक मूल्यों का विकास होता है तब-तब सभ्यता और संस्औति को उंचाइयां मिलती है।

आचार्यश्री ने अणुव्रत आंदोलन को आज की सबसे बड़ी जरूरत बताते हुए कहा कि राजनीति हो या सामाजिक व्यापारिक संगठन अब कोई भी क्षेत्र भ्रष्टाचार की गिरफ्त से मुक्त नहीं है, भ्रष्टाचार शब्द अब भगवान और ईश्वर से भी ज्यादा सुनने को मिल रहा है। जिसमें नैतिकता नहीं होती वह भगवान को भी धोका देता है। आचार्यश्री ने अणुव्रत के सिद्धांत पर आधारित अपनी लिखी औति 'तुलसी विचार दर्शन' को साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं और कार्यकर्त्ताओं को पढ़ने की सलाह देते हुए कहा - आचार्य तुलसी ने गिरते हुए मानवीय मूल्यों के उत्थान के लिये जिस अणुव्रत आंदोलन को शुरू किया है। सबका नैतिक दायित्व है कि इस अभियान को गति दें। अणुव्रत अनुशास्ता महाप्रज्ञ ने बीदासर अणुव्रत समिति द्वारा चलाये जा रहे अणुव्रत कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए कहा कि समिति अब अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को रफ्तार दे।

आर्हत वांग्मय के आयारो के सूत्र पर रोशनी डालते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा - जो मूर्च्छा में मशगूल रहता है। उसके जीवन में तपस्या, संयम और नियम की कल्पना नहीं की जा सकती। परिग्रहासक्त व्यक्ति के लिये कषाय विजय, कठोर साधना दुश्वार होता है। एक परिग्रह क्रोध, मान, माया लोभ इन चतुश्क कषायों को उत्तेजित करता है। इन्हीं उत्तेजनाओं से उत्तेजित होकर आत्मा अपने लिये दुर्गति को रास्ता बना लेती है। युवाचार्यश्री ने अणुव्रत समिति के तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा - अणुव्रती होने का सरोकार है मूर्च्छा के ताने-बाने को तहस-नहस करने की तैयारी करना, अणुव्रत वह नाव है जो संसार सागर से पार ले जाती है। जिसका वर्तमान अच्छा है उसका भविष्य भी सुखमय बन जाता है। अणुव्रत जाति, वर्ग, रंग, लिंग से उपर उठकर मानव में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था पैदा कर युगीन समस्याओं को समाधान देता है।

अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल ने अणुव्रत आंदोलन एवं अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए नैतिक अभियान में प्रत्येक व्यक्ति की आहूती से समाज की दशा और दिशा बदलने की बात कही।

इस अवसर पर साध्वी परमयशा, साध्वी धर्मयशा, साध्वी पुनीतयशा ने 25वें, मुनि कुमुद कुमार, मुनि अक्षय कुमार ने 13वें दीक्षा दिवस पर भावपूर्ण विचारों की प्रस्तुति देकर आराध्य से साधना की राह में सफलता का आशीर्वाद मांगा। साध्वी पुनीतयशा ने अपनी औति ''नमस्कार महामंत्र : एक अनुशीलन'' आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की।

कस्बे में चलेगा नशा मुक्ति का अभियान

बीदासर, 7 फरवरी।

मुनि सुखलालजी के निर्देश में एक दिवसीय अणुव्रत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार, मुनि प्रशान्त कुमार, मुनि किशनलाल, मुनि विजय कुमार एवं मुनि सुधाकर, मुनि अशोक कुमार ने प्रशिक्षण देते हुए कहा कि अणुव्रत सामाजिक चेतना का जागरण है तथा अणुव्रत अपने आप में असांप्रदायिक आन्दोलन है, जो मानवीय मूल्यों को स्थापित करने में सक्षम है। इस अवसर पर आयोजित शिविर के प्रथम व द्वितीय सत्र में ये सामुहिक निर्णय लिया गया कस्बे में नशा मुक्ति अभियान चलाया जायेगा वहीं अहिंसा के प्रशिक्षण के साथ-साथ अणुव्रत साहित्य का भी व्यापक अध्ययन किया जायेगा। शिविर में क्षेत्र के लगभग चालीस अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं एवं बुद्धिजीवियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर चुरू जिला अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री किशनलाल तातेड़ के असामयिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। शिविर में स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा, उपाध्यक्ष पंडित बजरंगलाल, मंत्री दिनदयाल प्रजापत, हरिश बांठिया, रतनलाल बैंगानी, नवलकिशोर मीणा, हाजी गुलजार हुसैन सलामपुरिया, महावीर बैद, रामस्वरूप रक्षक, ओमप्रकाश शर्मा, बनवारी लाल शर्मा, दानमल बांठिया, पवन जांगिड़ सहित अनेक लोगों ने भाग लिया।

इस अवसर पर हंसराज बुरड़ जसोल-बालोतरा ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'तुलसी विचार दर्शन' पुस्तक उपस्थित सभी शिविरार्थियों को भेंट की गई।

मर्यादा महोत्सव की मंगल भावना गोष्ठी संपन्न

चतुर्मासिक क्षेत्रों की तरफ विहार शुरू

बीदासर, 7 फरवरी।

145वें मर्यादा महोत्व के बाद आचार्य महाप्रज्ञ ने श्रीमद् मघवा समवसरण में साध्वी-साध्वियों, समण-समणियों को अंतिम गोष्ठी के रूप में सम्बोधित करते हुए अपने घोषित चतुर्मासिक क्षेत्रों में स्वस्थ रहते हुए जन-जन में आध्यात्मिक विकास करने की सीख दी।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, ज्ञानशाला, उपासक प्रशिक्षण आदि कार्यक्रमों को व्यवस्थित संचालन के दिशा निर्देश दिये। वहीं साधु-साध्वियों द्वारा किये गये श्रम और सेवा की प्रशंसा करते हुए कई बख्सीसें दी।

संगोष्ठी को साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने भी संबोधित किया। मंगलभावना संगोश्ठी के साथ ही साधु-साध्वियों के अपने-अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की तरफ विहार शुरू हो गये हैं।

अशोक सियोल
99829 03770